Jain Tark Bhasha

Folder No.	022395
Granth Name	Jain Tark Bhasha
Author	Ishwarchandra Sharma, Ratnabhushanvijay, Hembhushanvijay
Publisher	Girish H Bhansali
Edition	1
Year	
Pages	598

जैन तर्क भाषा

फोल्डर नं.	०२२३९५
ग्रन्थ	जैन तर्क भाषा
लेखक	ईश्वरचन्द्र शर्मा, रत्नभूषणविजय, हेमभूषणविजय
प्रकाशक	गीरीश एच. भणसाली
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	
पृष्ठ	५९८

मुख्य टाइटल
विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय का निवेदन ---------- १
भूमिका ---------- ३
आरम्भिक निवेदन ---------- ११
यशोविजय वाचकाष्टक ---------- २२
प्रस्तावना ---------- २३
शुद्धिपत्रक ---------- ३५
प्रमाण परिच्छेद ---------- १
- प्रमाण का सामान्य लक्षण ---------- १
- अर्थग्रहण शक्तिरूप प्रमाण लक्षण का निराकरण ---------- २१
- मतिज्ञान के भेदों का स्वरूप ---------- ४६
- अर्थावग्रह का निरूपण ---------- ७९
- मति ज्ञान के भेद प्रभेद ---------- ११०
- केवली के कवलाहार की सिद्धि ---------- १३७
- तर्क का निरूपण ---------- १८५
- हेतु का त्रिलक्षण स्वरूप ---------- २१६
- प्रमाण प्रसिद्ध आदि धर्मियों का निरूपण ---------- २५०
- प्रतिवादी के द्वारा आगम से स्वीकृत अर्थ का हेतुरूप में कथन परार्थानुमान है इसका खंडन ---------- २८५
- हेत्वाभासों का निरूपण ---------- ३२८
- कालात्यादिष्ट और प्रकरणसम का निषेध ---------- ३५१
- सप्तभंगी के सकलादेश और विकलादेश स्वभावों का निरूपण ---------- ३९३

नय परिच्छेद ---------- १
नय का लक्षण ---------- १
नय के स्वरूप ---------- ७
नयाभासों का निरूपण ---------- ४७
नयाभास और संग्रहाभास का स्वरूप ---------- ४८
अर्थनयाभास आदि का निरूपण ---------- ६३
निक्षेप परिच्छेद ---------- १
निक्षेप का लक्षण---------- १
स्थापना निक्षेप का स्वरूप ---------- ९
नामादि निक्षेपों का परस्पर भेद ---------- १९
संग्रह और व्यवहार स्थापना नहीं मानते इस मत का खंडन ---------- ५०
ग्रन्थकार कृत प्रशस्ति ---------- ७१
विवेचनाकार की मनःकामना ---------- ७२